अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – प्रथम कक्षा (5 जनवरी, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :– **10x1=(10)**

(a) वायुरूप ही जिन जीवों का शरीर है, उसे कहते हैं –

क. वायुकाय　　ख. त्रसकाय

ग. पृथ्वीकाय　　घ. वनस्पतिकाय　　(　　)

(b) चौदह पूर्वधारी अणगार एक हाथ के पुतले के बराबर शरीर बनाते हैं, उसे कहते हैं –

क. औदारिक शरीर　　ख. वैक्रिय शरीर

ग. आहारक शरीर　　घ. कार्मण शरीर　　(　　)

(c) सम्यक्त्व के अभाव में सीधे आत्मा से होने वाली रूपी पदार्थों की मर्यादित जानकारी को कहते हैं –

क. श्रुत–अज्ञान　　ख. विभंगज्ञान

ग. मति–अज्ञान　　घ. केवलज्ञान　　(　　)

(d) श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को कहते हैं –

क. दूषण　　ख. भूषण

ग. लक्षण　　घ. प्रभावना　　(　　)

(e) कठिन तपस्या करके धर्म की उन्नति करने वाले कहलाते हैं –

क. धर्म प्रभावक　　ख. प्रवचन प्रभावक

ग. तपस्वी प्रभावक　　घ. वादी प्रभावक　　(　　)

(f) भूषण कितने हैं –

क. 5　　ख. 3

ग. 8　　घ. 6　　(　　)

(g) देशमूल पच्चक्खाण में पालन किया जाता है –

क. महाव्रतों का　　ख. अणुव्रतों का

ग. शिक्षाव्रतों का　　घ. गुणव्रतों का　　(　　)

(h) अद्धा तप के भेद हैं –

क. 7　　ख. 5

ग. 10　　घ. 3　　(　　)

(i) शरीर के पुष्ट होने से संज्ञा उत्पन्न होती है –

क. मैथुन संज्ञा　　ख. आहार संज्ञा

ग. परिग्रह संज्ञा　　घ. भय संज्ञा　　(　　)

(j) हेयोपादेय का विशेष ज्ञान कहलाता है –

क. पच्चक्खाण ख. ज्ञान

ग. विज्ञान घ. संयम ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में लिखिए – **10x1=(10)**

(a) विपरीत श्रद्धान होना मिथ्यात्व गुणस्थान है। .....

(b) जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है, उसे संवर तत्व कहते हैं। .....

(c) वाणव्यन्तर देवों का एक दण्डक होता है। .....

(d) दुःखी जीवों के दुःखों को मिटाने की इच्छा अनुकम्पा है। .....

(e) गुणियों के मलिन वेष को देखकर श्रद्धा करना विचिकित्सा है। .....

(f) सर्वमूल गुण पच्चक्खाण के पाँच भेद होते हैं। .....

(g) मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में मूलगुण, उत्तरगुण और अपच्चक्खाण ये तीनों भंग पाये जाते हैं। .....

(h) मान मोहनीय कर्म के उदय से अहंकार आदि की चेष्टा होना 'माया' संज्ञा है। .....

(i) जो तप आगामी काल में करना है, उसे पहले कर ले, उसे 'अणागयं' कहते हैं। .....

(j) तप का फल 'कर्मों का नाश' होता है। .....

प्र.3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए – **10x1=(10)**

(a)	बंध	(क) संज्ञा	.....
(b)	आभ्यन्तर तप	(ख) सागार	.....
(c)	आत्मा	(ग) 3	.....
(d)	भवनपति	(घ) 8	.....
(e)	आगार	(च) 4	.....
(f)	शुद्धि	(छ) 10	.....
(g)	आहारादि की इच्छा	(ज) अनाश्रव	.....
(h)	अत्यन्त मूर्च्छा से	(झ) 6	.....
(i)	संयम का फल	(य) 6	.....
(j)	आगार सहित तप	(र) परिग्रह संज्ञा	.....

प्र.4 मुझे पहचानो – **10x2=(20)**

(a) मेरा स्थिर गुण है। .....

(b) मेरे 240 विकार हैं। .....

(c) मेरा स्वभाव या गुण सड़न–गलन–विध्वंसन है। .....

(d) मेरी गति प्रायः तिरछे लोक में रहने वालों जीवों की गति है। .....

(e) मेरा उदय नहीं होना सम है। .....

(f) मेरे विषय में सन्देह करना शंका है। .....

(g) मैं प्रज्ञापना सूत्र के आठवें पद पर आधारित थोकड़ा हूँ। .....

(h) मैं सर्वमूल गुण पच्चक्खाणी हूँ। .....

(i) मेरे उदय से कोपवृत्ति होती है। .....

(j) मेरा फल कर्मों का नाश है। .....

प्र.5 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए – (कोई नौ) **9x2=(18)**

(a) त्रसकाय किसे कहते हैं?

.....

.....

(b) आकाशास्तिकाय के तीन भेद लिखिए।

.....

.....

(c) संवर की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

(d) शुद्धि किसे कहते हैं? वचन शुद्धि को समझाइए।

.....

.....

(e) वाणव्यन्तर देवों के भेद कौन–कौनसे हैं?

.....

.....

(f) लक्षण की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

(g) प्रभावना किसे कहते हैं?ये कितनी होती हैं?

.....

.....

(h) सर्वमूल गुण पच्चक्खाण के कौन–कौन से भेद होते हैं?

.....

.....

(i) सवणे णाणे के थोकड़े में भगवान श्रवण का क्या फल बताते हैं?

.....

.....

(j) आभ्यन्तर तप की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन–चार वाक्यों में दीजिए – (कोई आठ) **8x4=(32)**

(a) उपयोग किसे कहते हैं?इसके तीसरे, सातवें, नवें तथा ग्यारहवें भेदों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) अंक 12 के भंग लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) निर्जरा किसे कहते हैं?इसके कौन–कौनसे भेद हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) श्रद्धान किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) 'भूषण' का अर्थ लिखकर उसके प्रथम तीन भेदों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) ओघ संज्ञा की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) लोक संज्ञा का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) सुपच्चक्खाण का भगवान ने क्या स्वरूप प्रतिपादित किया है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) बाह्य तप के भेदों को अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....